

यज्ञस्य प्राविता भव । (ऋ.-3.21.3) तू यज्ञ का रक्षक बना



यैन सद्नुष्ठानेन सम्पूर्णविश्वं
कल्याणं भवेदाध्यत्मिकाधि-
दैविकाधिभौतिकतापत्रयोन्मूलनं
सुकरं स्यात् तत् यज्ञपदाभिर्धेयम्

जिस सद्नुष्ठान से सम्पूर्ण विश्व
का कल्याण हो तथा आध्यात्मिक-आधि
दैविक-आधिभौतिक तीनों तापों
का उन्मूलन सरल हो, उसे यज्ञ कहते हैं।

लो हवन में श्वास गहरा । सुखमय जीवन हो सुनहरा ॥